अधिकारी चलवा रहे है मिलावट का धंधा

फ़रीदाबाद, पलवल (म.मो.) एक तरफ़ तो सरकार नागरिकों को शुद्ध व मिलावट रहित खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के लिये विज्ञापनों पर लाखों करोड़ों रुपये खर्च करती है दूसरी तरफ़ फ़रीदाबाद व पलवल का संयुक्त प्रभार संभाल रहे ज़िला खाद्य सुरक्षा अधिकारी पृथ्वी सिंह के संरक्षण में मिलावटखोरों की खूब चांदी हो रही है। वैसे तो कोई भी पृथ्वी सिंह हों अधिकतर फ़ूड एंड सेफ़्टी अधिकारी मंथली लेते हैं खानापूर्ती के लिये साल में दस पांच सैम्पल भर कर अखबारों में खबर छपवा देते हैं ताकि उनके अस्तित्व का लोग़ों को आभास होता रहे। ये सैम्पल भी उन्हीं दुकान या कारोबारियों के भरे जाते हैं जो इन्हें मंथली नहीं देते और यदि कोई नागरिक किसी का सैम्पल भरवाने को इनके पास चला भी जाये तो ये पहले तो उसको पूरी तरह से हतोत्साहित करते हैं यदि कोई फ़िर भी आग्रह करता है तो उससे पूरी जानकारी लेकर मिलावटखोर को सतर्क कर देते हैं। इसका प्रत्यक्ष अनुभव हुआ एक दूध उपभोक्ता को।

पलवल निवासी एक व्यक्ति ने, बामनीखेडा गांव की डेरी से अपना दूध लगवा रखा है। यह डेरी भारत सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय के अंतर्गत नाबार्ड से ऋण लेकर खोली हुई है। डेरी संचालक दूध को डिब्बों में बाकायदा सील लगाकर उसकी शुद्धता की गारंटी का दावा करने पलवल से फ़रीदाबाद तक घर-घर पहुंचाता है डेरी वाला गाय व भैंस दोनों का दूध सप्लाई करता है। दोनों के अलग-अलग डिब्बे होते हैं। पलवल के एक उपभोक्ता ने पिछले पांच छ: महीने से गाय का दूध लगवा रखा था। कुछ दिन तक तो दूध ठीक आया लेकिन पिछले एक महीने से दूध में कुछ मिलावट अनुभव की जा रही थी। इस बारे में डिलीवरी देने वाले वैन चालक से कहा भी गया था लेकिन दूध में गड़बड़ चलती रही। एक दिन उपभोक्ता के पास काफ़ी दूध बचा हुआ था। तो उसने उसका पनीर बनाने की सोची। पनीर बनाने के लिये जब दूध को फ ?ाड़ने के लिये उसमें नींबू का रस मिलाया तो दो किलो दूध में एक पाव नीबू का रस मिलाने के बाद भी दूध फ़ट नहीं पाया तो गड़बड़ साफ़ नज़र आ गई। अगले दिन उपभोक्ता ने एक मिल्क प्लांट के अधिकारी से इसके बारे में पूछताछ कि तो उसने बताया कि इसमें सिंथेटिक दूध हो सकता है बाकि इसकी जांच किसी प्रयोगशाला में करने पर मिलावट का पता चल सकता है। इस पर उसने एक मिल्क प्लांट की प्रयोगशाला में उनके द्वारा बताये गए मानकों के अनुसार दूध की जांच करवाई तो दूध में कास्टिक सोडा व पानी की मिलावट पाई गई। अगले दिन इस बारे में वह व्यक्ति पलवल में ज़िला खाद्य सुरक्षा अधिकारी पृथ्वी सिंह से उनके कार्यालय में मिला तथा उन्हें पूरी बात बताई तथा उन्हें दूध की रिपोर्ट भी दिखाई लेकिन अधिकारी महोदय को रिपोर्ट समझ ही नहीं आई तो उन्हें बताया गया कि इस रिपोर्ट के अनुसार दूध में कास्टिक सोडा व पानी की मिलावट है इसलिये मै इसका सैम्पल भरवाना चाहता हूं इसपर पृथ्वी सिंह कहने लगा कि रिपोर्ट में कोई खास गलत चीज़ नहीं है। लेकिन जब उसको एक एक्सपर्ट की राय बताई कि इसमें कास्टिक सोडा मिला हुआ है जोकि सिंथेटिक दूध में होता है। इस पर पहले तो वह लिखित शिकायत की मांग करने लगा जब उसमें पूछा कि क्या आपकी ड्यूटी नहीं कि आप स्वयं सैम्पल भरें। इस पर कहने लगा कि एक काम के लिये एक आदमी स्पेशल चंडीगढ़ भेजना पड़ेगा। इस पर उस व्यक्ति ने कहा कि आप भेजो खर्चा मैं दे दूंगा कम से कम मेरे कुछ खर्च करने से आम जनता का भला तो होगा और यदि लिखित शिकायत चाहिए तो वो भी मैं दे देता हूं। इसपर पृथ्वी सिंह कहने लगा कि ठीक है हम आज ही उसकी डेरी से सैम्पल भर लेंगे। शिकायतकर्ता ने कहा कि जिस समय आप जायें जरूरी नहीं है कि उस समय वहां दूध मिल ही जाये क्योंकि दूध सुबह-शाम ही मिल सकता है। इसपर अधिकारी जी बोले कि सुबह-सुबह कौन जायेगा। इसपर उन्हें बताया कि उसकी वैन शाम को पलवल फ़रीदाबाद तक दूध लेकर जाती हैं। आप आज ही सैंपल ले सकते हैं। इस पर कहने लगे कि वैन से हमें इंजरी हो सकती है शिकायतकर्ता ने कहा कि वो ज़िले के एसपी साहब से मिलकर पुलिस सुरक्षा का अनुरोध कर लेता है पर आप सैम्पल दिल से भरना चाहो तो बताओ नहीं तो वह कुछ और इंतजाम करता है। इसपर उसने मजबूरी में सैम्पल भरने की हां कर ली तथा शाम को साढे चार बजे का समय निश्चित हो गया और शिकायतकर्ता को साढे चार बजे उनके साथ चलने को कहा। लेकिन एक घंटे बाद किसी खास सूत्र ने शिकायकर्ता को बता दिया कि इसकी सूचना डेरी वाले के पास पहुंच चुकी है। इस पर शिकायतकर्ता ने फ़ोन करके उस दिन के लिये मकना कर दिया। लेकिन शिकायतकर्ता को उसी दिन शाम को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उनके घर एकदम बढिया दूध पहुंचा जिसमें सूचना के लीक होने की पुष्टि हो गई। इसके बाद शिकायतकर्ता ने कहीं से इस अधिकारी के बारे में पूछताछ की तो पता चला कि ये अभी कुछ महीने पहले ही अपना ट्रांसफ़र खुद ही करवा कर यहां आये हैं।

सांप्रदायिकता जैसे गंभीर मसलों का हल

सांप्रदायिकता जैसे गंभीर मसलों को हल न कर पाने वाली बल्कि उसको मजबूत करने वाली नाकाम राज्य सत्ता द्वारा बहुसंख्यकवाद को संतुष्ट करने वाली कार्रवाई करार दिया। मंच ने कहा कि भारतीय राज्य बहुसंख्यक सांप्रदायिक तत्वों के सामने लगातार घुटने टेक रहा है। यह संयोग नहीं है कि एक तरफ कर्नल पुरोहित और साध्वी प्रज्ञा को रिहा करवाने की कोशिशें चल रही हैं तो दूसरी तरफ याकूब मेमन को फांसी दी जा रही है।

रिहाई मंच के अध्यक्ष मुहम्मद शुऐब ने कहा कि याकूब मेमन को जब फांसी दी जा रही है तब इस बात पर भी बहस होना चाहिए कि बाबरी मस्जिद शहादत व उसके बाद देश में भड़की सांप्रदायिक हिंसा के गुनहगारों को क्यों नहीं सजा दी गई। बाबरी मस्जिद विध्वंस कर सांप्रदायिक राजनीति के खूनी परिपाटी लिखने वाली भाजपा की आडवाणी-कल्याण वाली पीढ़ी को जहां उनकी पार्टी ने रिटायर कर दिया तो वहीं 1993 मुंबई सांप्रदायिक हिंसा के अभियुक्त बाल ठाकरे अपनी मौत मर गए। आखिर जब कृष्णा कमीशन ने ठाकरे को 93 की सांप्रदायिक हिंसा का जिम्मेदार ठहराया था तो भारतीय राज्य सत्ता से यह सवाल है कि वह ठाकरे से डर रही थी या फिर जेहनी तौर पर वह ठाकरे जैसे दंगाइयों के साथ थी। ठाकरे की मौत के बाद जिस तरीके से राष्ट्रीय ध्वज को झुकाकर सम्मान देने की कोशिश की गई वह सत्ताधारियों द्वारा भारतीय संविधान को सांप्रदायिकता के आगे झुकाने की कोशिश थी। उन्होंने कहा कि अफजल गुरू मामले में देश की इंसाफ पसंद आवाम ने खुली आंखों से देखा है कि जनभावनाओं की संतुष्टि के लिए किस तरह बिना तथ्यों के उसे फांसी पर लटका दिया। आज उसी तरह याकूब मेमन के साथ भी किया जा रहा है। वह एक सह अभियुक्त है जबकि मुख्य अभियुक्त को आज तक पकड़ा नहीं गया बल्कि उसके पकड़ने और उसकी फरारी के नाम पर देश और दुनिया में मुसलमानों को बदनाम करने का काम किया गया है। दूसरा बहुसंख्यकों में बार-बार उसके डर का माहौल बनाकर केन्द्र में अबकी बार भाजपा ने कुर्सी हथियाई। रिहाई मंच नेता राजीव यादव ने कहा कि कृष्णा कमीशन ने भी इस बात को कहा है कि बाबरी मस्जिद विध्वंस और मुबंई में हुई सांप्रदायिक घटना के बाद की परिघटना मुंबई में हुए धमाके हैं। क्या हमारी राज्य सत्ता को कभी यह जरूरत महसूस नहीं हुई कि वह इन मामलों के हल और गुनहगारों पर कारवाई के लिए कोई ठोस रणनीति बना पाए। उन्होंने कहा कि राज्य सत्ता इन मामलों को हल नहीं करना चाहती है बल्कि इन मामलों के लाशों के ढेर पर खड़ी होकर सत्ता की कुर्सी हथियाना ही उसका उद्देश्य है। याकूब मेमन की फांसी के लिए हिन्दुत्ववादी राजनीति के साथ ही तथाकथित सेक्यूलर राजनीति भी उतनी ही जिम्मेदार है। राजीव यादव ने कहा कि याकूब मेमन की फांसी का आकलन जब इतिहास करेगा तो यह चीख-चीखकर कहेगा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र कहे जाने वाले देश के न्याय का पलड़ा बहुसंख्यक वाद के पक्ष में अल्पसंख्यकों के खिलाफ था। अभी वक्त है कि इतिहास हमारा सही आकलन करे इसलिए इस गलती को अभी सुधार लिया जाए।

-कमल

हिन्दू धर्म एवं राष्ट्र विरोध केअड्डे बने आईआईटी व आईआईएम-संघ

हिन्दू धर्म के सबसे बड़े ठेकेदार होने का दावा करने वाले आरएसएस (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ)ने अपने, अंग्रेजी में छपने वाले मुखपत्र ऑर्गेनाइज़र में कहा है कि देश भर के तमाम आईआईटी (भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान) व आईआईएम (भारतीय प्रबन्धन संस्थान) हिन्दू धर्म व राष्ट्र विरोध के अड्डे बन चुके हैं।

सर्वविदित है कि देश के उक्त अति प्रतिष्ठत संस्थानों में पढने के लिये देश भर की क्रीम आती है। ये तमाम मेधावी छात्र कड़ी प्रतियोगिता के बल पर इन संस्थानों में दाखिला पाते हैं। मज़े की बात तो यह है कि इन संस्थानों में पढने व पढाने वाले 80 से 90 प्रतिशत हिन्दू हैं तथा किसी एक-आध अपवाद को छोड़ कर तमाम संस्थानों के मुखिया भी हिन्दू ही हैं। संघ मुखपत्र ने आईआईटी मुंबई के मुखिया एवं जाने-माने परमाणु वैज्ञानिक अनिल काकोदकर तथा आईआईएम अहमदाबाद के मुखिया एएम नाइक को भी इस आरोप से नहीं बख्शा ।

दरअसल आरएसएस तो केवल उसको हिन्दू मानता है जो उनसे हिन्दू होने का प्रमाणपत्र प्राप्त करे और जो उनकी कसोटी पर हिन्दू ही नहीं तो वह देशभक्त कैसे हो सकता है ? इस हिसाब से देशभक्त केवल वही हो सकता है जिसे संघ प्रमाणपत्र दे, बाकी सब ठहरे देशद्रोही। संघ उसको हिन्दू मानता है जो इनके इशारों पर नाचे। 'लव जिहाद', 'घर वापसी', 'रामज़ादे और हरामज़ादे', 'मोदी विरोधी पाकिस्तान जाओ' जैसे जुमले चिल्लाये। इसके लिये जरूरी है कि वह ज्ञान-विज्ञान व तर्क-वितर्क की बातें न करे। पढने के नाम पर केवल गुरु गोलवरकर व ऐसे ही अन्य गुरूओं को पढे। देश की क्रीम कहे जाने वाले मेधावी छात्र भला कैसे अपने आप का इन गुरूओं की मूढमति से बांध कर रख सकते हैं।

सुधि पाठकों ने 'मज़दूर मोर्चा' के गतांक में संघ के द्वितीय सरसंघचालक गुरु गोलवरकर के विचार पढे होंगे जिनमें वे कहते हैं, ''हिन्दुओं, ब्रिटिश से लड़ने में अपनी ताकत बर्बाद मत करो। अपनी ताकत हमारे भीतरी दुश्मनों यानि मुसलमानों, ईसाईयों और कम्युनिस्टों से लड़ने के लिये बचा कर रखो।'' जाहिर है संघ के मुताविक तो केवल वही हिन्दू होने का प्रमाणपत्र प्राप्त कर सकता है जो उनकी इस गुरबाणी को माने और अमल करे। यानि कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिन्दू एवं देशभक्त केवल वही हो सकता था जो ब्रिटिश हकूमत की चाकरी एवं चापलूसी करे तथा अपने हमवतन मुसलमानों, ईसाइयों व कम्युनिस्टों को मारे। कम्युनिस्टों को मारना इसलिये जरूरी था क्योंकि वे मज़दूरों को पूंजीपतियों एवं उद्योगपतियों से तथा खेतीहर मज़दूरों एवं किसानों को सामंतों एवं जागीरदारों से उनका हक दिलाने की बात करते थे। मुसलमानों व ईसाईयों को मारने की बात इसलिये करते थे ताकि ब्रिटिश हकूमत के विरुद्ध मज़बूत होते आन्दोलन में फूट डाल कर उसे कमज़ोर किया जा सके।

जाहिर है गुरु गोलवरकर खुले रूप से ब्रिटिश हुकूमत, पूंजीपतियों व सामंतों की वकालत कर रहे थे। यदि उस वक्त के हिन्दू उनके बहकावे में आ जाते तो अंग्रेज़ी हुकूमत के विरुद्ध चलने वाला संघर्ष मुसलमानों, ईसाईयों व कम्युनिस्टों (मज़दूर-किसान नेताओं) के विरुद्ध चल निकलता। इसके परिणामस्वरूप देश की जनता आज़ादी की लड़ाई छोड़कर आपसी फ़िरकेवाराना लड़ाई में उलझ कर रह जाती और अंग्रेज़ मज़े से राज करते रहते। 'फूट डालो राज करो' की अपनी इसी नीति को आगे बढाते हुए अंग्रेज़ों ने एक ओर तो हिन्दुत्ववादी शक्तियों -आरएसएस, हिन्दू महासभा आदि को उभरने में सहयोग दिया तो दूसरी ओर इनसे भिड़ने के लिये मुस्लिम लीग और जमाते इस्लामी जैसे संगठनों को खड़ा करके उनकी जड़ों में खाद-पानी लगाया। इनके इसी टकराव से पैदा हुआ पाकिस्तान इस पूरे उपमहाद्वीप के लिये नासूर बन गया है। यह नासूर जहां स्थानीय जनता को खाये जा रहा है वहीं अमेरिकी एवं पश्चिमी देशों के लिये वरदान सिद्ध हो रहा है।

उक्त हिन्दुत्ववादी प्रचार के पीछे संघ का एकमात्र उद्देश्य जनता का ध्यान विकास, रोज़ी-रोटी एवं ग़रीबी उन्मूलन जैसे मूल मुद्दों से भटका कर अपनी भाजपा सरकार की राह आसान करना है। हिन्दू धर्म के नाम की अफ़ीम खाकर जनता अपने मूल मुद्दों से तो भटकेगी ही साथ में वोटों के ध्रुविकरण से होने वाला लाभ भी इनकी भाजपा को मिलेगा। परन्तु जनता में बढती जागरूकता के चलते संघ एवं भाजपा की यह तिकड़म सिरे चढने के आसार कम ही हैं।

-सतीश कुमार